RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 76, अंक : 2 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 14 अप्रैल, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076, सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com
www.aryapratinidhisabha.org

POSTAGE PRE-PAID
MAIL BUSINESS CENTRE
APR 2019
JALANDHAR CITY R.M.S.

वर्ष–76, अंक : 2, 11-14 अप्रैल 2019 तदनुसार 1 वैशाख, सम्वत् 2076 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

हवि-रहित यज्ञ

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

यत्पुरुषेण हविषा यज्ञं देवा अतन्वत।
अस्ति नु तस्मादोजीयो यद्विहव्येनेजिरे।।

-अथर्व० ७।५।४

शब्दार्थ-देवाः = निष्काम ज्ञानी **पुरुषेण+हविषा** = पुरुष-सम्बन्धी हवि से **यत्** = जो **यज्ञम्** = यज्ञ **अतन्वत** = करते हैं, **न** = सचमुच वह यज्ञ **तस्मात्** = उससे **ओजीयः** = अधिक ओजस्वी **अस्ति** = है, **यत्** = जिसका वे **विहव्येन** = हविरहित सामग्री से **ईजिरे** = यजन करते हैं।

व्याख्या-यज्ञ में अग्नि, समिधा, घृत और हवि आवश्यक हैं। अग्नि में समिधा डालकर, उसे प्रदीप्त करके घृत तथा हवि के द्वारा जहाँ उस अग्नि को अधिक प्रदीप्त करना होता है, वहाँ घृत और हवि अग्नि में पड़कर अधिक उपयोगी हो जाते हैं। हविः अग्नि में पड़ने से पूर्व कोई विशेष सुगन्ध नहीं देता, अग्नि में पड़कर वह सुगन्ध देने लगता है और अग्नि वायु की सहायता से उस सुगन्ध का प्रसार करके, जहाँ-जहाँ वह सुगन्ध पहुँचता है वहाँ-वहाँ से दुर्गन्ध को दूर करके वायु-शुद्धि आदि का कार्य करता है। यही अवस्था घृत की है। यह एक वैज्ञानिक सच्चाई है, जिसका अपलाप नहीं किया जा सकता। इस प्रकार के यज्ञों को द्रव्ययज्ञ या हविर्यज्ञ कहते हैं। इन द्रव्ययज्ञों से वायु आदि द्रव्यों की शुद्धि के साथ अन्तःकरण की शुद्धि भी थोड़ी-बहुत हो जाती है, क्योंकि इस प्रकार के यज्ञों से परोपकार अवश्य होता है।

वेद इस प्रकार के यज्ञों का विधान करता हुआ इससे भी उत्कृष्ट यज्ञ का विधान करता है, जिसमें किसी द्रव्य की आहुति न देकर अपनी आहुति देनी होती है। इस प्रकार के हविरहित यज्ञ को वेद बलवत्तर मानता है। उस यज्ञ का साङ्केतिक निरूपण अथर्ववेद [१९।४२] में है-

ब्रह्म होता ब्रह्म यज्ञा ब्रह्मणा स्वरवो मिताः।
अध्वर्युर्ब्रह्मणो जातो ब्रह्मणोऽन्तर्हितं हविः।।१।।
ब्रह्म स्रुचो घृतवतीर्ब्रह्मणा वेदिरुद्धिता।
ब्रह्म यज्ञस्य तत्त्वं च ऋत्विजो ये हविष्कृतः।
शमिताय स्वाहा।।२।।

ब्रह्म होता है, ब्रह्म यज्ञ है, ब्रह्म से स्वर बनाये गये हैं। ब्रह्म से अध्वर्यु उत्पन्न हुआ है, ब्रह्म से हवि आच्छादित है।। ब्रह्म ही घृत से भरी स्रुचाएँ हैं, ब्रह्म से वेदी बनाई गई है। ब्रह्म ही यज्ञ का तत्त्व हवि डालने वाले ऋत्विक् हैं, अतः शान्ति के लिए स्वाहा।

सबसे बड़ा यज्ञ वही है, जिससे संसार में शान्ति फैले। उस यज्ञ का होता, अध्वर्यु और अन्य सब ऋत्विक् ब्रह्म होना चाहिए। इतना ही नहीं, यज्ञ का सकल साकल्य भी ब्रह्म हो, यज्ञ के साधन, स्रुवा, वेदी आदि भी ब्रह्ममय हों, यज्ञ का तत्त्वसार भी ब्रह्म हो, इससे उसे 'शमिताय स्वाहा' कहा जा सकता है। यह महान् यज्ञ तभी हो सकता है जब अपना-आपा सर्वथा ब्रह्म के अर्पण कर दिया हो और अपने-आपको ब्रह्म का हथियार बना दिया हो। तब कर्तृत्व हमारा न होगा, ब्रह्म का होगा। द्रव्ययज्ञ उस यज्ञ की पहली सीढ़ी है। तभी प्रत्येक आहुति के साथ 'इदन्न मम' [यह मेरा नहीं है] कहना होता है। जिस दिन वास्तव में समझकर 'इदन्न मम' कहा जाएगा, उस दिन उस यज्ञ का प्रारम्भ होगा।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानाꣳसुमतौ स्याम।।

-यजु० ३४.३७

भावार्थ-हे परम पूज्य असंख्य धन आदि पदार्थदाता प्रभो! आप हम पर कृपा करें, कि हम आपकी कृपा और अपने पुरुषार्थ से शीघ्र ऐश्वर्ययुक्त और शक्तिमान् होवें। भगवन्! आपकी पूर्ण कृपा से ही पूर्ण विद्वान् महात्मा सन्त जन मिलते हैं। उनकी कृपा और सदुपदेशों से, हम अपना लोक और परलोक सुधारते हुए, सुखी रह सकते हैं। किसी उत्तम पुरुष का यह सत्य वचन है कि "बिना हरि कृपा मिले नहीं सन्ता।"

भग एव भगवानस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह।।

-यजु० ३४.३८

भावार्थ-हे महात्मा विद्वान् महापुरुषो! हम सबका पूजनीय इष्ट देव, सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर ही होना चाहिए, न कि जड़ पदार्थ वा कोई जल, स्थल वा जन्मता मरता कोई मनुष्य या पशु पक्षी। आप महापुरुष विद्वानों की कृपा से साधारण पुरुष भी प्रभु का भक्त बनकर भाग्यशाली बन जाता है और अनेक पुरुषों का कल्याण करता है। हे परमेश्वर! आपकी महती कृपा से, पुरुष विद्वान् और आपका सच्चा भक्त बनकर, अनेक पुरुषों को आपका भक्त बनाकर संसार से उनका उद्धारकर्ता बन जाता है। यह सब आपकी कृपा का ही प्रताप है।

युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिर्वि श्लोक एतु पथ्येव सूरेः।
शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः।।

-यजु० ११.५

भावार्थ-परम कृपालु परमात्मा, अपने भक्तों पर कृपा करते हुए कहते हैं-हे अमृत के पुत्रो! मेरे वचन को बड़े प्रेम से सुनो। आप लोग मुझको बारम्बार नमस्कार करते और मेरा ही मन में ध्यान धरते हो, इस लोक में कीर्ति और शान्ति को प्राप्त होओ। मोक्ष के अनन्त दिव्य सुख भी, आप लोगों के लिए ही नियत हैं, उनको प्राप्त होकर सदा आनन्द में रहो।

मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम

ले.-महात्मा चैतन्यमुनि

आदिकालीन मनु जी के सात पुत्र थे जिनकी एक शाखा में महाराजा सगर, सुखमंजस, विरूत, कद्दीप, भगीरथ, अशुंमान, अनरण्य, नहुष, त्रिशंकु, दिलीप, रघु और अज आदि हुए तथा दूसरी शाखा में सत्यवादी हरिश्चन्द्र आदि। वैवस्वत मनु के बाद इस सूर्यवंश की उनतालीस पीढ़ियों के बाद श्री राम जी ने अयोध्या में राजा दशरथ जी के यहां जन्म लिया। श्री राम जी के चरित्र में ऐसे उत्कृष्टतम गुण विद्यमान थे जिनके कारण आज लाखों वर्षों के बाद भी उन्हें घर-घर स्मरण किया जाता है। वास्तव में उनके सभी पूर्वजों का भी अपना अत्यधिक आदर्श जीवन था। इस प्रकार श्री राम में अपने पूर्वजों के ही गुणों का सामूहिक विकास हमें देखने को मिलता है। उनके दिव्य गुणों का प्रमाण हमें महर्षि बाल्मीकि और नारद जी की वार्ता से मिलता है। जब बाल्मीकि जी ने नारद से पूछा कि मुनि राज! इस समय संसार में गुणवान्, धर्मज्ञ, शूरवीर, सत्यवादी, कृतज्ञ और दृढ़ प्रतिज्ञा वाला मनुष्य कौन है? तो महामुनि नारद जी ने ऐसे व्यक्ति के रूप में श्री राम का ही नाम महर्षि जी के सम्मुख प्रस्तुत किया था तथा नारद जी से यह सुनने के बाद ही उन्होंने श्री राम पर रामायण महाकाव्य लिखने का निर्णय लिया था। बाल्मीकि जी ने अपने ग्रन्थ में श्रीराम जी को वेद वेदागंतत्वज्ञः-वेद वेदांग के तत्ववेता और सर्वविद्या-व्रतस्नातो यथावत्सा-गोवेदवित्-विद्याव्रत स्नातक तथा यथावत् अंगों सहित वेद का जानने वाला कहा है। यही नहीं वे आगे राम के गुणों के बारे में महाराजा दशरथ से केकैयी को कहलवाते हैं-क्षमा यस्मिंस्तपस्त्यागः सत्यं धर्मकृतज्ञता। अप्यहिंसा च भूतानांतमृते का गतिर्मम्।। अर्थात् हे केकैयी! जिस राम के अन्दर-क्षमा, तप, त्याग, सत्य, धर्म और कृतज्ञता तथा प्राणियों के लिए दया है, उस राम के बिना मेरी क्या गति होगी? अन्य अनेक स्थानों पर भी बाल्मीकि जी ने श्रीराम जी को मर्यादित, शरणागत, आस्तिक, धार्मिक और निश्चय बुद्धि वाला कहा है।

यूँ तो रामायण में वर्णित प्रत्येक व्यक्तित्व अपने आप में अद्वितीय एवं अतुलनीय है मगर इस महाकाव्य के महानायक श्रीराम जी का आदर्श व्यक्तित्व तो अत्यधिक विलक्षणता से परिपूर्ण है। महाराज दशरथ जी के लिए चारों राजकुमार ही प्रिय थे मगर श्रीराम के प्रति उनका विशेष अनुराग था तथा उस अनुराग का आधार श्रीराम जी आदर्श व्यक्तित्व ही था। इस अद्भुत व्यक्तित्व का हमें रामायण में अनेक स्थानों पर परिचय मिलता है। अयोध्या काण्ड में उन्हें ब्रह्मा के समान गुणवान् बताया गया है। अन्य गुणों की चर्चा करते हुए कहा गया है (अयो०का० 1-7) कि श्रीराम अत्यन्त रूपवान्, महाशक्तिशाली, दुर्गुणों से रहित, पृथिवी पर अनुपम और गुणों में दशरथ ही के समान थे। इसी क्रम में आगे कहा गया है (अ०का01-10,12) वे सदा प्रसन्नचित रहते और सब से मधुर बोलते थे। यदि कोई उनके प्रति कठोर वचन भी बोलता था तो तभी वे प्रत्युत्तर में कोई कठोर बात नहीं कहते थे। श्रीराम किसी प्रकार किए गए एक ही उपकार से सन्तुष्ट हो जाते थे और किसी ने उनके प्रति सैकड़ों अपकार किए हों तो भी उनका स्मरण न करते थे। वे दयालु, क्रोध को वश में रखने वाले, ब्राह्मणों का सम्मान करने वाले, दीनों पर दया करने वाले, धर्म को जानने वाले, जितेन्द्रिय एवं पवित्र थे। श्रीराम समस्त विद्याओं और ब्रह्मचर्य-व्रत में स्नान किए हुए अर्थात् विद्यास्नातक और व्रतस्नातक थे। वे अंगों सहित वेदों को जानने वाले और बाण-विद्या में अपने पिता जी से भी बढ़कर थे।

श्रीराम जी को राजा बनाने के पक्ष में अयोध्या की परिषद् ने श्रीराम जी के अनेक गुणों का वर्णन किया है। जिन में से कुछ इस प्रकार विवेचित किए गए हैं (अ०का०2-19 से 26) सत्यपराक्रमी श्रीराम दिव्य गुणों से इन्द्र के समान हो रहे हैं अतः वे इक्ष्वाकुवंशी राजाओं में सबसे श्रेष्ठ हैं। सत्यपरायण श्रीराम लोक में वस्तुतः श्रेष्ठ पुरूष हैं। उन्हीं से धर्म और अर्थ को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। प्रजा को सुख देने में श्रीराम चन्द्रमा के तुल्य, क्षमा करने में पृथिवी के समान, बुद्धि में बृहस्पति के तुल्य और पराक्रम में साक्षात् इन्द्र के समान हैं। वे धर्मज्ञ, सत्यवादी, शीलयुक्त, ईर्ष्या से रहित, शान्त, दुखियों का सान्त्वना देने वाले, मधुर-भाषी, कृतज्ञ और जितेन्द्रिय हैं। मनुष्यों पर कोई आपत्ति आने पर वे स्वयं दुःखी होते हैं और उत्सव के समय पिता की भांति प्रसन्न होते हैं। श्रीराम सदा सत्य बोलने वाले, महाधनुर्धर, वृद्धों की सेवा करने वाले, जितेन्द्रिय, हसंकर बोलने वाले और सब प्रकार से धर्म का सेवन करने वाले हैं। उनका क्रोध और प्रसन्नता कभी निरर्थक नहीं होती। वे मारने योग्य को मारते ही हैं और अवध्यों पर कभी क्रोध नहीं करते। वे यम-नियमादि पालन में कष्ट-सहिष्णु हैं। प्रजाजनों के प्रीतिपात्र हैं, स्वजनों में प्रीति उत्पन्न कराने वाले हैं। इन गुणों से अंलकृत श्रीराम रश्मियों से युक्त सूर्य की भांति देदीप्यमान हैं। उनका जीवन पूर्णरूप से निस्पृह, मर्यादित और त्यागमय था। उनके वीतराग स्वभाव का सबसे उत्तम उदाहरण हमें उस समय मिलता है जब राज्याभिषेक के स्थान पर उन्हें तुरन्त वन जाने की खबर दी जाती है। उनकी उस समय की स्थिति के बारे में कहा गया है-आहुतस्याभिषेकाय वनाय प्रस्थितस्य च। न लक्षितो मुखे तस्य स्वल्पोऽप्याकारविभ्रमः।। अर्थात् राज्यभिषेक की सुखद आज्ञा से न तो उनके मुख पर प्रसन्नता के चिन्ह दिखाई दिए और राज्य के बदले वनवास की आज्ञा मिलने पर न ही उनके मुख पर विषाद के चिन्ह दिखाई दिए। श्रीराम चन्द्र जी स्वयं इस प्रकार के आदर्श व्यक्तित्व के स्वामी थे इसीलिए अयोध्या का राज्य भी एक आदर्श राज्य था।

रामायण के अन्त में रामराज्य का वर्णन करते हुए कहा गया है कि (यु०का०38-25 से 31) श्रीराम जी के राज्य में न तो विधवाओं का करूण-क्रन्दन था, न सर्पों का भय था और न ही रोगों का भय था। राज्य भर में चोरों, डाकुओं और लुटेरों का कहीं नाम तक नहीं था। दूसरे के धन को लेने की बात तो दूर रही, कोई छूता तक नहीं था और राम के शासन-काल में किसी वृद्ध ने किसी बालक का मृतक-संस्कार नहीं किया। राम-राज्य में अपने-अपने वर्णानुसार धर्म-कृत्यों में तत्पर रहते थे अतः सब लोग सदा सुप्रसन्न रहते थे। श्रीराम दुःखी होंगे इस विचार से प्रजाजन परस्पर एक-दूसरे को दुःख नहीं देते थे। राम-राज्य में लोगों की आयु दीर्घ होती थी और लोग बहुत पुत्रों से युक्त होते थे। सभी अयोध्या निवासी रोग और शोक से रहित दीख पड़ते थे। राम-राज्य में वृक्ष सदा फूलते और फलते रहते थे। उनकी शाखाएं लम्बी होती थीं। वर्षा यथासमय होती थी और सुख-स्पर्शी मन्द समीर चला करती थी। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र कोई भी लोभी प्रवृति का नहीं था। सब लोग अपना-अपना काम करते हुए एक-दूसरे से सन्तुष्ट रहा करते थे। श्रीराम के राज्य में समस्त प्रजा सत्य के साथ रहती थी और झूठ से सर्वदा सदा दूर रहती थी। सब लोग शुभगुणों से युक्त थे और सभी धर्मपरायण होते थे।

मंगलमय नूतन वर्ष हो!

सुन्दर समुज्वल उत्कर्ष हो।
मंगलमय नूतन वर्ष हो।।

हृदय विस्तृत व्योम सम,
मस्तिष्क सरस सोम सम।
बुद्धि विकसित प्रबोध हो,
निःसृत चंहुदिश हर्ष हो।
मंगलमय नूतन वर्ष हो।।

अदृश्य दुरित समस्त हों,
कलुषित दुर्ग ध्वस्त हों।
भद्रताओं के उज्जास का,
भूतल को दिव्य स्पर्श हो।
मंगलमय नूतन वर्ष हो।।

छवि मानवता की गहन,
दानवता का शिविर दहन।
अभ्युदय हो मातृ भू का,
ऊंचा भाल अहर्निश हो।
मंगलमय नूतन वर्ष हो।।

एकता मूल-मन्त्र सृजित,
उपवन का हर पुष्प मुदित।
'जीओ और जीने दो' तले,
कहीं न कोई संघर्ष हो।
मंगलमय नूतन वर्ष हो।।

सम्पादकीय

मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के आदर्शों पर चलें

भारत में प्रतिवर्ष चैत्र सुदि नवमी को राम नवमी का पर्व बड़े उत्साह और भक्तिभाव से मनाया जाता है और भारत भर का हिन्दू चाहे वह किसी भी समुदाय से सम्बन्ध क्यों न रखता हो, इस दिन भगवान श्रीराम का जन्मदिवस मनाकर अपने आपको कृत-कृत्य समझता है। इसमें कोई भी सन्देह नहीं कि भारत में और भी बड़े-बड़े महापुरूष तथा ऋषि-मुनि हुए हैं किन्तु भगवान राम के प्रति आस्था रखने वाले लोगों की संख्या इतने लाख वर्षों के बीत जाने के बाद भी कम नहीं हुई और न ही उनकी मान्यता में कोई कमी आई है। यदि इसके कारणों पर विचार करें तो यह पता चलता है कि भगवान राम का जीवन कुछ इस तरह से भारत के जन-जन के हृदय पटल पर अंकित हो गया है कि उसे काल की कोई अवधि मिटा नहीं सकती। इस देश के लोग श्रीराम को मर्यादा पुरूषोत्तम कहते हैं। इसका अर्थ यह है कि वह मनुष्य जो मर्यादा बना सकता है। भगवान राम उसकी अन्तिम सीमा थे। वह पुरूष भी उत्तम थे और उनकी मर्यादाएं भी उत्तम थी। उन्होंने मानव मात्र के लिए मर्यादा पालन का जो आदर्श प्रस्तुत किया था वह संसार के इतिहास में कहीं और नहीं मिल सकता।

उदाहरण के लिए उन्होंने अपना पहला आदर्श आज्ञाकारी पुत्र के रूप में प्रस्तुत किया। उनके पिता राजा दशरथ अपनी रानी कैकेयी से वचनबद्ध थे। रानी कैकेयी ने ठीक उस समय जब राम का राज्याभिषेक होने वाला था उसी समय राम को वनवास और अपने पुत्र भरत के लिए राज्यतिलक की माँग कर दी। दशरथ नहीं चाहते थे किन्तु अपने पिता के वचन का पालन करने के लिए भगवान राम ने एक पल में राज-पाट को त्याग दिया और वनवासी बनकर वनों को चले गए। पूरे चौदह वर्ष उन्होंने वन में बिताए ऐसा आदर्श कौन प्रस्तुत कर सकता है। संसार में जितने भी युद्ध और लडाईयाँ अब तक हुई हैं वह राज प्राप्ति के लिए हुई हैं किन्तु भगवान राम ने जो आदर्श प्रस्तुत किया उसकी तो कल्पना भी नहीं कर सकता।

दूसरा आदर्श उन्होंने एक आदर्श भाई का प्रस्तुत किया। यद्यपि भरत की माता कैकेयी ने उन्हें राज-पाट के बदले वनवास दिलाया था किन्तु श्रीराम ने भरत से न ईर्ष्या की और न द्वेष। वह निरन्तर भरत के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करते रहे और उसे राज-काज सम्भालने की प्रेरणा करते रहे। उन्होंने उसे कभी अपना प्रतिद्वन्दी नहीं समझा। आज के समय में कोई इस प्रकार का आदर्श प्रस्तुत कर सकता है। आज के इस समय में जब जमीन जायदाद के लिए भाई-भाई के खून का प्यासा है। पतन के इस समय में मर्यादा पुरूषोत्तम राम के द्वारा स्थापित आदर्श भ्रातृप्रेम के आदर्श को अपनाकर उनसे प्रेरणा ले सकते हैं।

तीसरा आदर्श उन्होंने आदर्श पति का प्रस्तुत किया। वह चौदह वर्ष वनों में रहे और वनवासी होकर रहे ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया और वनों में रहने वाले ऋषियों-मुनियों की सेवा का व्रत लिया। जो राक्षस ऋषियों के यज्ञ में विघ्न डालते थे उन राक्षसों का संहार किया। इस काल में उन्होंने गृहस्थ की चिन्ता नहीं की अपितु अपनी सम्पूर्ण शक्ति को राक्षसों का संहार करने के लिए लगाया। रावण ने जब उनकी धर्मपत्नी सीता को चुराने का दुस्साहस किया तो श्रीराम ने इस दुष्कृत्य के लिए रावण का सर्वनाश कर दिया। सबसे बड़ी बात यह है कि वह एक आदर्श राजा थे। आज भी लोग राम राज्य की कामना करते हैं। राज्य तो था ही राजा के लिए किन्तु श्रीराम ने राजा का जो आदर्श प्रस्तुत किया उसे आज तक कोई भुला नहीं सकता। आज समस्त संसार राम राज्य की कामना और अभिलाषा रखता है। महात्मा गांधी भी अपने देश में राम राज्य की स्थापना करना चाहते थे। राम राज्य में कोई चोर नहीं था, कोई व्यभिचारी नहीं था, कोई भ्रष्टाचारी नहीं था। किसी प्रकार का कोई कष्ट क्लेश राम राज्य में नहीं था इसीलिए सारी प्रजा सुखी थी।

मर्यादापुरूषोत्तम श्री राम अपने प्रति किए गए थोड़े से उपकार से भी प्रसन्न हो जाते थे और अगर कोई उनके प्रति सैकड़ों अपकार भी करता था तो उनकी ओर भी ध्यान नहीं देते थे। इस विषय में श्रीराम के जीवन की एक घटना का अवलोकन कीजिए। चित्रकूट में बैठे हुए श्रीराम और लक्ष्मण वार्तालाप में संलग्न थे। लक्ष्मण भरत की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि हे राम! महात्मा भरत भी सारे भोग विलासों को छोड़ कर आपकी ही भांति तप कर रहे हैं। वे भी भूमि पर सोते हैं, शीतल जल से स्नान करते हैं परन्तु मुझे एक बात समझ नहीं आई आप मेरी इस शंका का समाधान कीजिए-

भर्ता दशरथो यस्याः साधुश्च भरत सुतः।
कथं नु सा अम्बा कैकेयी तादृशी क्रूरदर्शिनी।।

हे राम! जिसका पति महाराजा दशरथ जैसा हो, जिसका पुत्र साधु भरत जैसा हो, वह माता कैकेयी किस प्रकार ऐसे क्रूर स्वभाव की हो सकती है।

श्रीराम लक्ष्मण द्वारा की गई माता कैकेयी की इस निन्दा को सहन न कर सके और उन्होंने कहा-

न ते अम्बा मध्यमा तात गर्हितव्या कदाचन।
तामेवक्ष्वाकुनाथस्य भरतस्य कथां कुरू।।

हे भाई लक्ष्मण! तुम मझली माता कैकेयी की निन्दा मत करो। तुम तो इक्ष्वाकुनाथ भरत की ही चर्चा करो। ये थी मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम की अपने प्रति बुरा करने वालों के प्रति भावना।

मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम के विषय में कहा जाता है कि-

द्विः शरं नाभिसंधत्ते, द्वि स्थापयति नाश्रितान्।
द्विर्ददाति न चार्थिभ्यो रामो द्विर्नाभिभाषते।।

अर्थात् राम दो बार बाण को धारण नहीं करते अर्थात् एक ही बार में शत्रु का काम तमाम कर देते हैं। राम दो बार आश्रितों को स्थापित नहीं करते अर्थात् एक ही बार भली प्रकार यथास्थान नियुक्त कर देते हैं। वे याचकों को दो बार नहीं देते अर्थात् एक ही बार में दरिद्रों के दारिद्रय का नाश कर देते हैं। राम दो बातें नहीं कहते अर्थात् एक ही बार कही हुई प्रतिज्ञा का पालन करते हैं।

संक्षेप में भगवान राम की लाखों वर्ष पश्चात भी भारतीय जनमानस में स्मृति बने रहने का मूल कारण उनका अपना आदर्श जीवन है। ऐसा आदर्श महापुरूष हमें समूचे इतिहास में कभी प्राप्त नहीं हो सकेगा। यही कारण है कि भगवान राम हिन्दू संस्कृति और सभ्यता के एक अभिन्न अंग बन गए हैं।

राम नवमी के शुभ पर्व पर भगवान राम का पवित्र और आदर्श जीवन यही प्रेरणा देता है कि हम उनकी मर्यादाओं का पालन करते हुए अपने जीवनों, अपने परिवार और अपने देश को सुखी और शान्तिमय बनाएं। इस वर्ष 13 अप्रैल को राम नवमी का पर्व आ रहा है। हिन्दू संस्कृति से जुड़े लोग अपने-अपने ढंग से इस पर्व को मनाते हैं। नगर कीर्तन तथा शोभायात्राओं के माध्यम से श्रीराम की झाँकियां निकाली जाती हैं। सारे देश में इस पर्व को बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है परन्तु आज हमें विचार करना है कि हम कहां तक मर्यादा पुरूषोत्तम राम की मर्यादाओं तथा उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास कर रहे हैं। भगवान राम ने जो आदर्श और भ्रातृप्रेम के उदाहरण प्रस्तुत किए हैं उन आदर्शों को त्याग की भावनाओं को अपनाएं बिना हम राम राज्य की कल्पना भी नहीं की सकते। भगवान राम के गुणों को, उनके आदर्शों को अपनाकर हम राम नवमी के पर्व को सार्थक कर सकते हैं।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

दयानन्द और राष्ट्रीय चेतना

ले.-श्री विश्वप्रकाश दीक्षित

स्वामी दयानन्द सरस्वती आरंभ से ही एक चेतना-सम्पन्न व्यक्तित्व के धनी थे। मूर्ति पर चूहे को चढ़ा देख जो कौतूहल जागा था, वह उनकी जागृत-चेतना का ही प्रतिबिम्ब था। वह ब्रह्मचारी बड़ा पारदर्शी-दृष्टि-सम्पन्न और गुण-ग्राहक था, जिसने मूल जी को ब्रह्मचर्याश्रम में दीक्षित कर उन्हें 'शुद्ध चैतन्य' की संज्ञा प्रदान की। विकसित चेतना वाले शुद्ध चैतन्य ने अल्पायु में ही दण्डी स्वामी विरजानन्द से उनकी सम्पूर्ण विद्या ग्रहण की और अष्टाध्यायी, महाभाष्य, वेदान्त-सूत्रादि ग्रन्थों का अध्ययन पूरा करके देश-भ्रमण की उत्कट कामना से गुरु-आश्रम का परित्याग कर दिया। गुरु-दक्षिणा के उत्सव में भावी चेतना का जो उत्स स्वामी दयानन्द के आत्म-प्रदेश से फूटा, उसका कारण था विदा समय पर गुरु-मुख से निकला आशीर्वाद। स्वामी विरजानन्द ने कहा था-

''दयानन्द! मुझे लौंग नहीं चाहिए। मुझे जो गुरु-दक्षिणा चाहिए, वह तुम्हीं दे सकते हो। मैं चाहता हूँ कि तुम देश के अज्ञान को दूर करो, कुरीतियों का निवारण करो, जिन ग्रन्थों में परमात्मा एवं ऋषि-मुनियों की निन्दा है, उनका त्याग कर आर्षग्रन्थों का प्रचार करो। वैदिक ग्रन्थों के पठन-पाठन में लोगों को लगाओ, गंगा-यमुना के प्रवाह की भांति लोकहित की कामना से क्रियाशील जीवन व्यतीत करो। यही मेरी गुरु-दक्षिणा है।''

गुरु जी का यह आशीर्वाद ही स्वामी दयानन्द की राष्ट्रीय चेतना को जगा गया और फिर जो राष्ट्रीयता की भावना उन्होंने देशवासियों के भीतर भरी वह राष्ट्रीय-स्वतंत्रता के निमित्त किये गये संग्रामों की निर्देशिका बनी। इतिहास में रुचि रखने वाले भली भांति जानते हैं कि गवर्नर-जनरल लार्ड लिटन ने महारानी विक्टोरिया को ''भारत-राजेश्वरी'' घोषित करने के लिए प्रथम जनवरी सन् १८७७ में दिल्ली-दरबार का आयोजन किया था। इस अवसर पर देश के सभी नरेश और अन्य गण्यामान्य व्यक्ति दिल्ली पधारे थे। दूरदर्शी स्वामी दयानन्द भी उस समय दिल्ली पहुँचे। वे उस दरबार में शामिल होने नहीं आये थे, देश-प्रेम की भावना उन्हें वहाँ खींच लाई थी। कहना न होगा कि जिस बात को देश के स्वाधीनता-संग्राम के कर्णधारों ने बहुत बाद में जाकर अनुभव किया, स्वामी दयानन्द ने उसे उसी समय अनुभव कर लिया था। सम्पूर्ण राष्ट्र में एकता की स्थापना का उपयुक्त मार्ग खोज निकालने के लिए ही वे दिल्ली आये थे। देश की एकता ही उन्नति की साधक है, देश को पराधीनता के चंगुल से छुटकारा मिलना ही चाहिए, और यह काम राष्ट्रीय एकता से ही सम्पन्न होगा, यह बात स्वामी जी ने भली-भांति अनुभव कर ली थी। स्वामी जी ने सम्पूर्ण देश की उन्नति और राष्ट्रीय एकता पर विचार करने के लिए एक सभा का आयोजन किया। इस सभा में केशवचंद्र सेन, हरिदेशमुख, सरसैयद अहमद खां, हरिश्चन्द्र चिन्तामणि आदि भी पधारे थे। इस सभा में ही स्वामी जी ने राष्ट्रीय चेतना का शंखनाद करने वाली 'आर्य-समाज' की स्थापना का विचार प्रस्तुत किया था। यहीं से स्वामी जी ने सम्पूर्ण देश की यात्रा का विचार बनाया। वे समूचे भारत में भ्रमण के लिए निकले और देश के प्रत्येक बड़े नगर में उन्होंने 'आर्य समाज' की स्थापना की। देश के लिए बड़े से बड़ा बलिदान देकर देश को स्वाधीनता दिलाने वाली संस्था कांग्रेस में बहुसंख्यक लोग आर्यसमाजी विचारधारा के ही थे। सच तो यह है कि कांग्रेस और आर्यसमाज एक प्रकार से पर्यायवाची जैसे हो गये। अधिकांश विद्वानों की यह दृढ़ धारणा है, 'आर्य-समाज ने स्वामी दयानन्द के आशीर्वाद को लेकर देश भर में एक जबर्दस्त क्रान्ति की, जिससे देशभर में जागरण हुआ, देशभक्त बने, देश पर मर मिटने की भावना जगी। हरिजन नेता भी प्राय: आज जो कांग्रेस अथवा अन्य दलों में दिखाई देते हैं, उन पर स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज की कृपा रही है।' अछूतोद्धार, नारी-जागरण, साक्षरता-आंदोलन आदि की चेतना स्वामी जी ने ही जगाई थी।

देश जगाने का जो संकल्प स्वामी जी ने लिया था, वे उससे एक पग भी पीछे नहीं हटे। जिन दिनों देश में 'स्वराज्य' का कोई नाम भी नहीं जानता था, उन दिनों स्वामी जी ने देश को 'सत्यार्थ-प्रकाश' और 'अपने देश में अपना राज्य' का नारा दिया। स्वामी जी ने कहा था कि विदेशी शासन चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, अपने शासन से अच्छा नहीं हो सकता। स्वामी जी के ये विचार उनकी देशभक्ति और राष्ट्रभावना के प्रतीक हैं। स्वामी जी के ये विचार और लोकमान्य तिलक का यह नारा-स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है-समान ही हैं।

जिस समय करोड़ों की संख्या में लोग हिन्दू-जाति से कटकर अलग हो रहे थे, उस समय स्वामी दयानन्द ने उन्हें हिन्दू बने रहने के साधन जुटाने में हाथ बंटाया। आर्य समाज की हरिजनोद्धार की सेवा भुलाई नहीं जा सकती। राजनैतिक विचारों का आंकलन और सर्वेक्षण करने वालों का यह कथन सर्वथा सत्य है-'स्वामी दयानन्द के बाद इन जातियों के लिए जो सुधार या अधिकार मिले थे, वे राजनैतिक रहे। किन्तु स्वामी जी वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने पिछली शताब्दी में अपने प्रयत्न से अस्पृश्यता निवारण करके हरिजनों को गले लगाया।' राष्ट्रीय जागरण के लिए जरूरी था कि देश में फैली कुरीतियों का अंत किया जाये। आर्य समाज ने स्वामी जी के निर्देशानुसार यह कार्य भी किया। कुरीतियों को दूर करने के लिए शिक्षा की आवश्यकता थी। शिक्षा के प्रचार और प्रसार की ओर भी स्वामी जी ने ध्यान दिया। देश में आज जितनी शिक्षा दिखाई दे रही है, उसमें लगभग आधी शिक्षा का बीजारोपण करने वाले स्वामी दयानन्द थे। उन्होंने अंग्रेज़ों से लोहा लेकर विदेशी शिक्षा-प्रणाली के मुकाबले भारत की प्राचीनता शिक्षा-प्रणाली को पुनरुज्जीवित करने के लिए गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति की स्थापना की।

देश की मातृ-चेतना प्रसुप्त थी। स्त्रियों को पढ़ने-पढ़ाने की सुविधा न थी। उन्हें भी ढोंगियों ने शूद्र का दर्जा दे रखा था। हर ओर से स्त्रियों की प्रगति के द्वार बन्द थे। सब से पहले इस क्षेत्र में लोहा लेने वाले भी स्वामी दयानन्द ही थे। सर्वप्रथम आपने ही स्त्री-शिक्षा के द्वार खुलवाये। स्वामी जी की कृपा से ही भारतीय नारी को वेद-पाठ का अधिकार मिला। वे भी पुरुषों की भांति यज्ञोपवीत धारण कर सच्चे अर्थों में आर्या बनीं।

स्वदेशी की भावना भी पहले पहल स्वामी जी ने ही जगाई। उन्होंने देशवासियों को विदेशी वस्तुओं का परित्याग करके स्वदेशी वस्तुएं अपनाने का परामर्श दिया। स्वदेशी के प्रसंग में ही यह बात स्मरण रखने योग्य है कि स्वामी जी ने भारतीय विचारों के वहन के लिए भारतीय भाषाओं को प्रमुखता दी। आपने समस्त भाषाओं की मूल संस्कृतभाषा के उन्नयन का कार्य किया। देश की एकता के लिए गुजराती होते हुए भी आपने राष्ट्रभाषा हिन्दी को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। इस दृष्टि से स्वामी दयानन्द और गुरु गोविन्द सिंह जी दोनों की ही देश-सेवा सराहनीय कही जायेगी।

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य समाज नवांशहर...

शर्मा, आर्य समाज के वयोवृद्ध नेता सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, जिया लाल शर्मा मंत्री आर्य समाज, श्री वीरेन्द्र सरीन, श्री अक्षय तेजपाल, श्री सतीश पुरी, श्री नन्देश, प्रिंसीपल संजीव डाबर आर.के.आर्य कालेज, श्रीमती तरुणप्रीत वालिया प्रिंसीपल बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज, श्री कुलवन्त राय शर्मा, बी.एड कालेज का सम्पूर्ण स्टाफ तथा अन्य शिक्षण संस्थाओं से भी अध्यापिकाएं, प्राध्यापक व प्राचार्य उपस्थित थे। अंत में बी.एड. कालेज की प्रधानाचार्या श्रीमती गुरविन्द्र कौर ने व सभी पदाधिकारियों ने छात्राओं को पारितोषिक वितरण किये तथा प्राचार्य ने आए हुये अतिथियों का धन्यवाद किया तथा हमेशा ही इसी तरह का सहयोग की कामना की।

-अमित शास्त्री पुरोहित आर्य समाज

पृष्ठ 8 का शेष-नव सम्वत पर जिला आर्य सभा...

पर अपनी अपनी गलतियों को सुधारना चाहिये। इससे आर्य समाज में सद्भावना का माहौल पैदा होगा। जिला आर्य सभा लुधियाना की प्रधाना श्रीमती राजेश शर्मा जी ने सभी का धन्यवाद करते हुये कहा कि स्वामी दयानन्द जी निराले महापुरुष थे जिन्होंने देश को स्वभाषा, स्वधर्म, स्वसंस्कृति, स्वदेश का बोध आदि कराया। प्रति वर्ष आर्य समाज स्थापना दिवस हमें जगाने आता है और संभालने आता है। जिस उद्देश्य और कर्त्तव्य प्राप्ति के लिये संस्था का निर्माण किया गया था उस दिशा में हमने क्या खोया क्या पाया? कितने हम आगे बढ़े, क्या कारण है जिस उद्देश्य को लेकर आर्य समाज की स्थापना की थी उस दिशा में हम पिछड़ गये। इन सभी बातों का हमें चिन्तन एंव मनन करना चाहिये। हम आज आर्य समाज स्थापना दिवस पर संकल्प लें कि सेवा, त्याग, नियम, सिद्धान्त, अनुशासन का निर्वाह करेंगे। जिन बातों का ऋषि ने निषेध किया है वह कभी नहीं करेंगे।

इस समारोह में जिला आर्य सभा के उप प्रधान श्री रणवीर शर्मा, श्री राजेन्द्र कोडा, श्री वजीर चंद, कोषाध्यक्ष श्री अरूण सूद जी, मंत्री श्रीमती सविता शर्मा, श्री रमेश सूद, श्री जनकराज भगत, श्री श्रवण बत्रा जी, श्री राजेन्द्र बेरी, श्री सुरेश शर्मा, डा. भनोट, श्री अयोध्या प्रसाद, श्रीमती अनुपमा गुप्ता, श्री सतपाल मोंगा, आशा मोंगा, सत्या गम्भीर, हर्ष आर्य, श्री जे.पी. पनेसर, हैप्पी शुक्ला, श्री सत्य भूषण बांगिया, श्री जगजीव बस्सी, कर्मवीर गुलाटी, अशोक भारद्वाज, प्रिं. सतीशा शर्मा, प्रिंसीपल अनु शर्मा, श्रीमती वीना गुलाटी, ज्योति जोशी, रेखा कोहल, मेधा शर्मा, सूक्ष्म वालिया, राकेश अरोडा आदि उपस्थित थे। इसके साथ ही जिला की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के पदाधिकारी एवं सदस्य भी इस अवसर पर बहुसंख्या में उपस्थित हुए।

-डा. विजय सरीन महामंत्री

वेद एवं वैदिक संस्कृति के पुनरुत्थान में महर्षि दयानन्द का योगदान

ले.-प्रा. चन्द्रप्रकाश 'आर्य'

वेद भारतीय-संस्कृति अथवा आर्य-संस्कृति के आधार-ग्रन्थ हैं। भाषाविज्ञान की शब्दावली में वेद भारोपीय परिवार (Indo-European family) के प्राचीनतम ग्रंथ हैं। समस्त-उत्तरवैदिक साहित्य वेदों के व्याख्या-ग्रन्थ माने गए हैं। ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, वेदाङ्ग, उपवेद, षड्दर्शन, सूत्रग्रन्थ, स्मृतियाँ तथा प्रातिशाख्य आदि सबका सम्बन्ध वेद से जोड़ा गया है। मनुस्मृति वेद को परम प्रमाण मानती है तथा वेद से भूत, भविष्यत्, वर्तमान सब कुछ सिद्ध हो सकता है। कविकुलगुरु कालिदास का कहना है कि यह वेदवाणी ओंकार से आरम्भ होती है तथा उदात्त, अनुदात्त एवं स्वरित तीन भेद से इसका उच्चारण होता है। विभिन्न भारतीय भाषाओं से भी अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। भारत में उद्भूत दर्शन एवं सम्प्रदाय या तो वैदिककोटि में माने गए हैं या अवैदिक। वैसे प्रत्येक सम्प्रदाय अपने को वैदिक ठहराने का प्रयास करता है। वेद का इतना महत्त्व है कि इसके ज्ञान को नित्य माना गया है। इसकी शब्दानुपूर्वी (Word-order) को भी नित्य माना गया। इसीलिए संभवत: वेदमन्त्रों की श्रुतिपरम्परा से जिस तरह रक्षा की गई वैसी, आज तक समस्त वैदिक, लौकिक संस्कृत अथवा भारतीय भाषा-साहित्य में किसी भी ग्रन्थ की रक्षा नहीं की गई। हजारों वर्षों से वेदमन्त्रों को कण्ठस्थ किया जाता रहा है और आज भी यह परम्परा अपने मूल रूप में अक्षुण्ण है, यह वेदपाठियों का दावा है। उसका एक भी अक्षर इधर से उधर नहीं हुआ। विश्व के इतिहास में ऐसा उदाहरण नहीं मिलता। इस परम्परा को अक्षुण्ण (ज्यों का त्यों) बनाए रखने के लिए ऋषियों ने अनेक उपाय किए। प्रत्येक मन्त्र में ऋषि देवता, छन्द और स्वर का विधान किया गया। अष्ट विकृतियों अर्थात् एक मन्त्र का आठ प्रकार से पाठ करने की प्रणाली चालू की गई और उनमें किसी-किसी पाठ के तो आगे २५ भेद हैं। फिर वेदमन्त्रों के अध्यात्म, आधिदैवत, आधिभूत भेद से तीन-तीन अर्थ होते हैं। वेदार्थ के लिए व्याकरण का अध्ययन आवश्यक है, क्योंकि वेदमन्त्रों में सभी लिंगों एवं विभक्तियों का उल्लेख नहीं मिलता। निरुक्त के अनुसार वेदार्थ के लिए ऋषि तपस्वी एवं विद्वान् होना आवश्यक है। उसका राग और द्वेष तथा पक्षपात से रहित होना भी अपेक्षित है (The fellow should be dispassionate, objective, unbiased, having mastery over the subject)

ऐसे गम्भीर और जटिल विषय का फल क्या है? महामुनि पतंजलि के शब्दों में वेद का एक शब्द भी, यदि उसको अच्छी तरह समझ कर जीवन में ढाल लिया जाए-लोक और परलोक की सिद्धि करने हारा है। बिना अर्थज्ञान के-वेदार्थ को हृदयंगम किए बिना-वेद को पढ़ना व्यर्थ में भार ढोने के समान है। वेदार्थ को जानने हारा सकल कल्याण को प्राप्त करता है। वेदमन्त्र नारियल के फल के समान बाहर से दुर्गम एवं कठोर है, परन्तु भीतर उनमें जीवनरस भरा हुआ है। उसको फोड़कर ही-वेदमन्त्रों को समझ कर ही-वह रस चखा जा सकता है। वह रस चखा कैसे जाए? मन्त्रों का मनन करने से, केवल पढ़ने से नहीं; काम, क्रोध, राग, द्वेष से रहित होकर मनन-चिन्तन करने से।

इस प्रकार का है यह वेद का जगत्-आश्चर्यजनक भी है, सूक्ष्म और गम्भीर भी है। सर्वजनहिताय है, सर्वभूत मैत्रीप्रतिपादनाय है। विश्व के समस्त अमृत-पुत्रों-अमर मानवों-के लिए है। समस्त पृथिवी इसका क्षेत्र है। वेदान्तदर्शन के शब्दों में जगत् और ब्रह्म के बीच समन्वय-स्थापक है, जो कुछ जगत् में है, उसका वर्णन वेद में है। प्राचीन काल से लेकर आज तक वेद को समझने का प्रयास होता रहा है। पाश्चात्य एवं पौरस्त्य विद्वान् (Indologists or Sanskritists of the East and the West) वेद को समझने का यत्न करते रहे हैं, परन्तु वेद अब भी रहस्य बने हुए हैं।

इन्हीं वेदों के लिए यतिवर दयानन्द ने अपना जीवन लगाया तथा उनके द्वारा प्रवर्तित आर्य समाज ने विगत 144 वर्षों में इसके प्रचार और प्रसार का प्रयत्न किया। एक वाक्य में आर्य समाज के पिछले वर्षों की कहानी वेदों के प्रचार की कहानी है। इसमें उसे कितनी सफलता मिली, यह निर्णय करना सुविज्ञ पाठकों पर है। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के पुनर्जागरण (renival) में अनेक महान् आत्माओं ने अपना योगदान दिया परन्तु इसके मूल उत्स-प्रेरणास्त्रोत वेद की ओर हमारा ध्यान किसने खींचा, इसका निर्णय स्वयं पाठक करें। दयानन्द इसलिए महान् नहीं कि वे आर्य समाज के संस्थापक थे, अपितु इसलिए कि उन्होंने वेद का उद्धार किया, वैदिक संस्कृति का पुनरुत्थान किया। जैसे कभी मण्डनमिश्र के द्वार पर शुकसारिकाओं में वेद के स्वत:प्रमाण अथवा परत: प्रमाण होने के बारे में चर्चा होती थी, वैसे ही विगत 144 वर्षों में आर्य समाज के मंच से विभिन्न रूपों में वेद की ही चर्चा रही है और आज इसी का परिणाम है कि 'ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ़ इण्डिया' में विन्सैण्ट स्मिथ ने आर्य समाज के वेद-विषयक मत का उचित उल्लेख किया है, अन्य किसी संस्था या सम्प्रदाय को यह श्रेय नहीं मिला। महर्षि दयानन्द ने वेद में ही मानव की सब समस्याओं का समाधान ढूँढा तथा वेद में ही सब ज्ञान-विज्ञान को बताया-बर्तानिया ज्ञान का विश्वकोष (Encyclopaedia Britannica-A universal survey of knowledge) इस बात को स्वीकार करता है:-'He (Dayanand Saras-wati)' sought in the Vedas a solution to the problems of human misery and final salvation—he discerned the endowment of true learning, the arts of manufacture, Chemistry, popular instruction etc. all in the Yajna or sacrificial cult."

वेद के बारे में दयानन्द और उनके आर्यसमाज ने एक शताब्दी पूर्व जो स्थापनाएं रखी थीं, वे आज विद्वद्-जगत् को मान्य हो चली हैं। इतिहासकार, वेदवित् तथा संस्कृतज्ञ उनके मत को उचित स्थान देने लगे हैं। प्रश्न केवल निष्पक्ष होकर विचार करने का है। आर्य समाज मानो रथ और दयानन्द उस रथ के सारथि हैं और वेद मानो उनका सुदर्शनचक्र था, जिसके द्वारा उन्होंने अज्ञान, अविद्या तथा अवैदिक विचारों की कौरवसेना का विध्वंस किया। सत्यार्थ-प्रकाश के प्रथम दस समुल्लासों में दयानन्द ने सनातन वैदिक संस्कृति के सिद्धान्तों का विश्व विवेचन हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया है।

वेद आर्य अथवा भारतीय संस्कृति के उद्गम-स्त्रोत हैं। भारतीय विद्याभवन बम्बई से प्रकाशित History and Culture of Indian People प्रथम खण्ड की भूमिका में डॉ. मजुमदार इसको स्वीकार करते हैं। वेद, ईश्वरीय ज्ञान है, ऋषियों ने तप एवं समाधि के द्वारा वेदमन्त्रों का साक्षात् किया, दयानन्द की यह अगली स्थापना थी। डा. राधाकृष्णन् जैसे दार्शनिक इस मत को स्वीकार करने लगे हैं। उनका कहना है कि वेद में वर्णित आध्यात्मिक सत्यों का धर्म एवं तपश्चर्या द्वारा पुन: साक्षात् या प्रत्यक्ष किया जा सकता है, ("The cheif sacred scriptures of the Hindus, the Vedas, register the intuitions of the perfected souls. They record the spiritual experiences of the souls strongly endowed with the sense of reality... The truths revealed in the Vedas are capable of being re-experienced on compliance with ascertained conditions.)

आर्य लोग बाहर से नहीं आए, दयानन्द की इस मान्यता को कई विद्वान् स्वीकार करने लगे हैं। डा. के. एम. मुन्शी इस मत को मानते हैं तथा एक स्वतन्त्र लेख को भी इस विषय में History and Culture of Indian People में स्थान दिया गया है।

वेद के विषय में दयानन्द की स्थापनाओं के सन्दर्भ में मैं अपनी ओर से अधिक कुछ न कहकर हिन्दी विश्वकोष को उद्धृत करूंगा, जिसे नागरी-प्रचारिणी-सभा वाराणसी ने प्रकाशित किया है, इसका समस्त व्यय भारत-सरकार ने वहन किया है। यह भी एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका की तरह हिन्दी में ज्ञान का विश्वकोष (Encyclopaedia Hindi) है। इस विश्वकोष के खण्ड ११ में वेद के विषय में दामोदर सातवलेकर को प्रमाणिक मानकर अक्षरश: उद्धृत किया गया है। इससे बढ़कर दयानन्द की स्थापनाओं की दिग्विजय और क्या हो सकती है? आर्य समाज के लिए यह गौरव का विषय है कि अन्तत: सुधी विद्वानों ने निष्पक्षभाव से उसकी मान्यताओं का आदर किया है। सातवलेकर के बारे में पाठकों को विदित रहे कि उन्होंने ऋषि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित पद्धति का अनुसरण किया है। दयानन्द से पहले आधुनिक समय में किसी ने वेद की ओर हमारा ध्यान नहीं खींचा। सातवलेकर के शब्दों में-जो राष्ट्र के लिए श्रेष्ठ सन्देश देता है, वही ऋषि कहलाता है। स्वामी दयानन्द सचमुच ऋषि थे, क्योंकि उन्होंने हिन्दुओं के पतन का सच्चा कारण देखा और उन्नति का सच्चा

(शेष पृष्ठ 7 पर)

वेदों में मित्रता

ले.-शिवनारायण उपाध्याय कोटा

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है! जन्म से लेकर मृत्यु तक वह समाज में ही रहता है। समाज में ही उसका लालन-पालन, शिक्षा-दीक्षा आदि की व्यवस्था होती है। बालकपन में वह अपने मोहल्ले के समवयस्क बालकों के साथ खेलता-कूदता है। फिर विद्यालय में साथ-साथ आता-जाता है। लगातार साथ रहने से उनमें एक स्नेह की भावना उत्पन्न हो जाती है। खेलने अथवा विद्यालय जाने के लिए वे एक दूसरे के घर पर जाकर आवाज़ लगाते हैं और फिर साथ-साथ जाते-आते हैं। लम्बे समय साथ रहने से उनके अन्दर एक-दूसरे की सहायता करने की भावना भी उत्पन्न हो जाती है और यही विकसित होकर मित्रता का रूप धारण कर लेती है। शिक्षा प्राप्ति काल में कई छात्र-छात्राओं से मिलना होता है और लगातार साथ पढ़ने-लिखने से भी मित्रता उत्पन्न हो जाती है। बड़ी आयु में कोई व्यवसाय करते समय अथवा किसी कार्यालय में सालों तक साथ-साथ रहना भी मित्रता उत्पन्न करा देता है। मित्रों में एक दूसरे की हर तरह से सहायता करते रहने की प्रवृत्ति भी बन जाती है। मित्रता कभी एक पक्षीय नहीं होती है। मित्रता में दोनों ही तरफ से आदान-प्रदान की आवश्यकता होती है। वेदों में भी इस विषय पर चिंतन हुआ है।

तं त्वा शोचिष्ठः दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः।

स नो बोधि श्रुधी हवमुरूष्याणाऽअघायत सम-स्मात्।। यजु. 3.26

पदार्थ-हे (शोचिष्ठ) अत्यन्त शुद्ध स्वरूप (दीदिवः) स्वयं प्रकाशमान आनन्द दाता जगदीश्वर। हम लोग (नः) अपने वा (सखिभ्यः) मित्रों के (सुम्नाय) सुख के लिए (तं त्वा) आप से (ईमहे) याचना करते हैं तथा जो आप (नः) हम लोगों को (बोधि) अच्छे प्रकार विज्ञान को देते हैं (सः) वह आप (नः) हमारे (हवम्) सुनने सुनाने योग्य स्तुति समूह यज्ञ को (श्रुधी) कृपा करके श्रवण कीजिये और (नः) हमको (सम स्मात्) सब प्रकार (अघायतः) पापाचरणों से अर्थात् दूसरे को पीड़ा करने रूप पापों से (उरूष्य) अलग रखिये।

भावार्थ-सब मनुष्यों को अपने, अपने मित्र और सब प्राणियों के सुख के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि जिससे प्रार्थित किया हुआ परमेश्वर अधर्म से अलग होने की इच्छा करने वाले मनुष्यों को अपनी सत्ता से पापों से पृथक् कर देता है वैसे ही उन मनुष्यों को भी पापों से बचकर धर्म कार्यों के करने में निरन्तर प्रवृत्त होना चाहिए।

मित्रों में आपस में वस्तुओं का आदान-प्रदान होते रहना चाहिए। आदान-प्रदान की प्रक्रिया दोनों ओर से चलती रहना चाहिए।

देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे।

निहारं च हरासि मे निहारं नि हराणि ते स्वाहा।। यजु. 3.50

पदार्थ-हे मित्र। तुम (स्वाहा) जैसे सत्यवाणी हृदय में कहे वैसे (मे) मुझको यह वस्तु (देहि) दे अथवा मैं (ते) तुझको यह वस्तु (ददामि) देऊँ अथवा देऊंगा तथा तू (मे) मेरी यह वस्तु (निधेहि) धारण कर मैं (ते) तुम्हारी यह वस्तु (निदधे) धारण करता हूं और तू (मे) मुझको (निहारं) मूल्य से क्रय करने योग्य वस्तु को (हरामि) दे मैं (ते) तुझको (निहारम्) पदार्थों का मूल्य (निहाराणि) निश्चय करके देऊं (स्वाहा) यह सब व्यवहार सत्यवाणी से करे अन्यथा ये व्यवहार सिद्ध नहीं होगें।

भावार्थ-सब मनुष्यों को देना-लेना, पदार्थों को रखना-रखवाना, अथवा धारण करना-धारण करवाना सत्य प्रतिज्ञा से ही करनी चाहिए। ऐसे व्यवहार के अभाव में किसी मनुष्य को प्रतिष्ठा अथवा सिद्धि नहीं प्राप्त होती है और इन दोनों के अभाव में कोई भी मनुष्य सुख प्राप्त करने में समर्थ नहीं हो सकता है।

यजुर्वेद तो हमें प्राणी मात्र से मित्रता के संबंध स्थापित करने की शिक्षा देता है-

दृते दृꣳ हं मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।

मित्रस्याऽ हं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे। यजु. 36.18

पदार्थ-हे (दृते) अविद्या रूपी अंधकार के निवारक जगदीश्वर। जिससे (सर्वाणि) सब (भूतानि) प्राणी (मित्रस्य) मित्र की (चक्षुषा) दष्टि से (मा) मुझको (सम् ईक्षताम्) सम्यक् देखे। (अहम्) मैं (मित्रस्य) मित्र की (चक्षुषा) दृष्टि से (सर्वाणि भूतानि) सब प्राणियों को (समीक्षे) सम्यक् देखूं। इस प्रकार हम सब लोग परस्पर (मित्रस्य) मित्र की (चक्षुषा) दृष्टि से (समीक्षामहे) देखें। इस विषय में हमको (दृꣳहं) दृढ़ कीजिये।

इसी प्रकार ऋग्वेद में भी इस विषय पर चिंतन हुआ है।

न स सखा यो न ददाति सख्ये सचा भुवे सचमानाय पित्वः।

अपास्मात् प्रेयान्न तदोको अस्ति पृणन्त मन्मरणं चिदि-च्छेत्।।

ऋ.10.117.4

पदार्थ-(न) नहीं है (सः) वह (सखा) मित्र (यः) जो (सचा भुवे) साथी की (सचमानाय) सेवा करने के लिए समय पर तत्पर (सख्ये) मुसीबत में पड़े हुए मित्र के लिए (पित्वः) अन्न आदि आवश्यक वस्तुओं को (न) नहीं (ददाति) देता है। (अस्मात्) इस अदाता के पास से (अप प्र इयात्) अर्थी मित्र बिना कुछ पाये वापस जाता है तो फिर (तत्) वह (ओकः) घर (न) नहीं (अस्ति) है। (सः) वह गया हुआ अर्थी मित्र (अन्यम्) दूसरे (प्रणन्तम्) दाता (अरणम्) धन के स्वामी को (चित्त) भी (इच्छेत्) चाह सकता है।

भावार्थ-वास्तव में मित्र की परीक्षा आपत्ति काल में ही होती है। यदि आपत्ति काल में कोई व्यक्ति अपने मित्र के पास सहायता प्राप्त करने की इच्छा से जाता है और वह मित्र उसे सहायता देना अस्वीकार कर देता है तो वह व्यक्ति घर वापस आकर किसी दूसरे धनी व्यक्ति से याचना करेगा और उससे सहायता प्राप्त हो जाने पर उसे अपना मित्र स्वीकार कर लेगा और पहले मित्र के पास जाना बन्द कर देगा।

न यः सं पृच्छे न पुनर्हवीतवे न संवादाय रमते।

तस्मान्नो अद्य समृतेरू रूष्यतं बाहुभ्यां न उरूष्यतम्।।

पदार्थ-(यः) जो (नः) न तो (सं पृच्छे) प्रश्नोत्तर विधि में (रमते) रूचि लेता है (पुनः न) नहीं फिर (हवीतवे) दान आदान में रूचि लेता है और (न) न (संवादाय) संवाद के लिए तैयार होता है (न अद्य) अभी-अभी हमें समाज को (तस्मात्) उसने आने वाली (समृते) टक्कर से (ऊष्यतम्) बचाना है, (बाहुभ्याम्) बल और पराक्रम की प्रतीक इन भुजाओं के द्वारा (नः उरूष्यतम्) हमें बचाये रखना है।

भावार्थ-जो व्यक्ति न तो प्रश्नोत्तर विधि में रूचि लेता है, नहीं दान आदान में रूचि लेता है और न संवाद के लिए तैयार होता है ऐसे व्यक्ति से दूरी बनाये रखना ही उचित है।

आ नो गहि सख्येभिः शिवेभिर्म्महान्महीभिरूतिभिरसरण्यन्।

अस्मे रयिं बहुलं सन्तरूत्रं सुवाचं भागं यशसं कृधी नः।।

ऋ.3.1.19

पदार्थ-हे विद्वान्। आप (शिवेभिः) मंगलमय (सख्येभि) मित्रों के किये हुए कर्मों के साथ (नः) हम लोगों को (आ गहि) प्राप्त हूजिये। (महीभिः) बड़ी-बड़ी (ऊतिभिः) रक्षाओं से (अस्मे) हम लोगों को (सरण्यन्) प्राप्त होते हुए (महान्) बड़े सज्जन आप (सन्तरूत्रम्) दुःख से अच्छे प्रकार तारने वाले (सुवाचम्) सुन्दर वाणी के निमित्त (यशसम्) कीर्ति करने वाले (भागम्) सेवन करने योग्य (बहुलम्) बहुत प्रकार के (रयिम्) पुष्कल धन को प्राप्त (नः) हम लोगों को (कृधि) कीजिये।

अर्थात् अच्छे मित्र वाला व्यक्ति धनवान हो जाता है।

नये सत्र का शुभारम्भ हवन यज्ञ से किया

दयानन्द पब्लिक स्कूल में नए शैक्षणिक सत्र का शुभारम्भ हवन यज्ञ से हुआ। पंडित योगराज शास्त्री जी ने वैदिक मंत्रोच्चारण से हवन यज्ञ किया। बच्चों ने हवन यज्ञ में आहुतियाँ डाली। पंडित जी ने बच्चों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि हमें कोई भी कार्य करने से पहले उस परमपिता परमात्मा की कृपा मांगनी चाहिए और इसी उद्देश्य से नए सत्र का आरम्भ करने से पहले स्कूल प्रबंधक द्वारा हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। ताकि बच्चों को अपनी वैदिक संस्कृत से जोड़ा जा सके और उनमें अच्छे संस्कार पैदा हो सके। इस अवसर पर बच्चों को आशीर्वाद देने के लिए प्रबंधकीय कमेटी के प्रधान श्री संत कुमार जी आर्य विशेष रूप से उपस्थित हुए। उन्होंने बच्चों को अपना आशीर्वाद देते हुए कहा कि गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी बोर्ड परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करके स्कूल के नाम को रोशन करना है और उन्होंने बच्चों को उनकी वार्षिक परीक्षा परिणाम की सफलता पर बधाई देते हुए कहा कि उनकी इस सफलता का श्रेय योग्य अध्यापको एवं अभिभावकों का है। प्रिंसीपल मैडम श्रीमती निर्मल कांता जी ने यज्ञ की पूर्णाहति की सफलता पर अपने स्टाफ को बधाई दी। **-प्रिंसिपल**

पृष्ठ 5 का शेष-वेद एवं वैदिक संस्कृति...

मार्ग भी देखा। यह सत्य दृष्टि ही ऋषि की दृष्टि है। उनके समय में बहुत लोग थे, नेता भी बहुत थे, वे नेतागण हिन्दुओं के उद्धार का मार्ग भी सोचते थे परन्तु किसी ने वेद का मार्ग देखा नहीं। उस समय शास्त्री, पण्डित भी बहुत थे, परन्तु वे बेचारे वेद को जान भी नहीं सकते थे, फिर वेद के धर्म से मानवों का तारण होने की बात जानना और वैसा उपदेश करना तो दूर की बात है। केवल अकेले ऋषि दयानन्द जी के पास ही यह ऋषित्व आता है। इन्होंने ही यह सच्ची रीति से जाना और कहा कि वेदों को पढ़ो और वेदोपदेश को आचरण में लाओ।

विश्वकोष में लिखा है कि यज्ञ में पशुवध नहीं होता, क्योंकि वेद में वध करने का कोई मन्त्र नहीं है-

''ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनं हिंसीः''

''हे औषधि, इसका संरक्षण कर, हे शस्त्र, इसकी हिंसा न कर।'' मन्त्र का स्पष्ट भाव पशु का संरक्षण करना ही है। गोमेध में गाय का वध उचित नहीं क्योंकि वेदों में गौ को अधन्या (अवध्या) कहा है। अजमेध में बकरे का वध करना अनुचित है, क्योंकि अज एक धान्य का नाम है। कोश में अज के अर्थ अजशृङ्गी, ओषधि, प्रेरक, नेता, सूर्यकिरण, चन्द्रमा, प्रकृति, माया आदि हैं। राष्ट्रसेवा ही अश्वमेध यज्ञ है-

''राष्ट्रं वा अश्वमेधः''

(श० ब्रा० ३।१४६।३)

वैदिक यज्ञों के बारे में यह स्थापना किस की थी? पाठक स्वयं अनुमान करें।

अथर्ववेद-अथर्व का अर्थ गतिरहितता अर्थात् शान्ति है। सचमुच अथर्ववेद आत्मज्ञान देकर विश्व में शान्ति-स्थापना करने का महत्त्वपूर्ण कार्य करता है।

''थर्वेति गतिकर्मा तत्प्रतिषेधी निपातः।'' (निरुक्त)

इससे पहले तो अथर्ववेद जादू-टोने-चमत्कार का ही पिटारा बन गया था। दयानन्द ने उसे वेदत्व का दर्जा दिलवाया, अन्यथा उसके वेद होने को ही नकारा जाने लगा था।

ये वेद मानव की उन्नति करने का सच्चा धर्म बतलाते हैं। ऋग्वेद (१०।१६१।२) का उपदेश है- ''संगच्छध्वं संवदध्वं'' (हम मिलकर चलें, मिलकर बोलें, हमारे मन एक हों)। यजुर्वेद (४०।१) कहता है कि यह सारा संसार ईश की सत्ता से व्याप्त है ; त्याग भाव से इसका उपभोग करो।

दयानन्द की अगली स्थापना थी- वेद में इतिहास नहीं। सातवलेकर इस सम्बन्ध में लिखते हैं कि वेद में इतिहास-पुराण की कल्पना पृथक् है। भारत के ऋषि-मुनि मानवीय शरीरों की हलचल को इतिहास नहीं मानते। शरीर की हलचल मानसिक विचारों से होती है। वेद में दशरथ, दु:शासन गुणबोधक नाम हैं। अयोध्या नगरी शरीर को कहा है, जिसमें आठ चक्र और नवद्वार हैं। ये मानवीय भावों और विचारों का शाश्वत और सनातन इतिहास है, यूरोप के इतिहासकारों के कथनानुसार मानवों के अशाश्वत इतिहास नहीं हैं।

दयानन्द का उद्देश्य कोई नवीन सम्प्रदाय अथवा मत-मतान्तर चलाने का नहीं था। उन्होंने उसी प्राचीन वैदिक मार्ग का पुनरूद्धार (revival) किया, जिसको ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त मानते आए हैं। वेद परमप्रमाण है, वेद-विरुद्ध जितनी भी स्मृतियां या ग्रन्थ हैं वे निरर्थक है तथा वेद को पढ़ना ही सबसे बड़ा तप या धर्म है। ऋषि दयानन्द ने मनु की इन धारणों को अक्षरश: सत्य या चरितार्थ कर दिखाया। इसी कारण उन्होंने मत-मतान्तरों की आचोलना की किसी हानि या द्वेष के भाव से नहीं।

वर्तमान समय में जब हम एक शताब्दी बाद यतिवर दयानन्द के विचारों का मूल्यांकन (estimate) करते हैं, तो वेद एवं वैदिक अथवा आर्य संस्कृति अथवा भारतीय संस्कृति के बारे में उनकी मौलिक स्थापनाएँ मान्य एवं सत्य हो चली हैं। परन्तु मत-मतान्तरों या विभिन्न धर्मों के बारे में उनके विचारों में संशोधन की आवश्यकता है तथा इसी प्रकार का दृष्टिकोण त्याज्य अथवा अपाठ्य ग्रन्थों के बारे में अपनाने की आवश्यकता है। विचारों की समय-समय पर पुनर्व्याख्या (review) पुनरालोचना होती रहने से ही विचार वैज्ञानिक एवं तर्कसंगत बने रहते हैं, अन्यथा वे रूढ़िग्रस्त (traditional, old) पुराने तथा असंगत हो जाते हैं। पुनरालोचन से सारतत्त्व (मुख्य बातें) छँट जाता है तथा गौण बातें त्याग दी जाती हैं। वेद एवं वैदिक संस्कृति का पुनरूद्धार दयानन्द का मुख्य लक्ष्य अथवा साध्य था। मतों की आलोचना तथा त्याज्य ग्रन्थों का उल्लेख यह साधन था। साधन कभी स्थायी नहीं होते, वे देशकालानुसार बदलते रहते हैं। यही दृष्टिकोण (approach) हमें राग, द्वेष और पक्षपात से रहित होकर अपनाना होगा। विभिन्न भारतीय धर्मों एवं मतों तथा ग्रन्थों में से हम वेदानुकूल को ग्रहण कर लें। दूसरे इन सब में मूलभूत विचार (fundamental ideas) तो उसी वैदिक अथवा आर्य संस्कृति के ही हैं। विभिन्न धर्मों के बारे में विगत एक शताब्दी में काफ़ी शोध (research) कार्य हुआ है। हम नई खोज तथा नए विचारों से लाभ उठाएँ।

आज हमें कालिदास, माघ और भारवि के काव्यों को त्यागने की आवश्यकता नहीं है, न ही सांख्यतत्त्वकौमुदी तथा तर्कसंग्रह से डरने की आवश्यकता है। यही दृष्टिकोण तुलसी-रामायण के बारे में अपनाना है, विगत ५० वर्षों में इस पर काफ़ी अनुसंधान हुआ है। हाँ हम इन्हें तर्क की कसौटी पर परख लें। इसी प्रकार पुराणों के बारे में भी अनेक आलोचनात्मक अध्ययन (Crtical studies) या ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। स्वयं गीताप्रेस गोरखपुर से राधा और कृष्ण की तथा पुराणों में कृष्ण-लीला की युक्तिसंगत व्याख्या प्रकाशित हुई है। इसी प्रकार का दृष्टिकोण हमें विभिन्न मतों एवं धर्मों के बारे में अपनाने की आवश्यकता है। सब मतों की अच्छी बातें-जो-जो बातें सब के अनुकूल सत्य हैं, उनको हम ग्रहण कर लें और जो एक दूसरे के विरुद्ध हैं उनको हम त्याग दें। हमें सब को अपने साथ लगाना है, समस्त मानवसमाज का कल्याण करना है, सबको श्रेष्ठ बनाना है। सबकी उन्नति में हमारी उन्नति है। भारतोद्भूत जितने भी धर्म हैं-हिन्दू, जैन, सिख-इनका मूलस्त्रोत तो एक ही है। ये सारे एक सनातन वैदिक धर्म या आर्य-धर्म में विलीन हो जाते हैं। इसी प्रकार ईसाई तथा मुस्लिम धर्मों के प्रति भी हमें अपना दृष्टिकोण उदार तथा विस्तृत करना होगा, क्योंकि आज विज्ञान की दुनिया में समस्त मानवसमाज एक इकाई (Unit or family) बन गया है।

धर्मों एवं मतमतान्तरों की आलोचना से ऋषि दयानन्द का तात्पर्य था कि धर्म में तर्कसंगतता (reasonability) युक्ति एवं हेतु (argument) की प्रधानता हो, अंधविश्वास तथा आडम्बर न हो। हम बाबा-वाक्यं को प्रमाण न मानें। सत्य, असत्य की स्वयं परीक्षा तथा छानबीन करें। यही उनकी धर्म को स्थायी देन हैं।

आर्य समाज नवांकोट अमृतसर में शहीदों को श्रद्धांजलि

आर्य समाज नवांकोट अमृतसर में शहीदी दिवस 31-3-2019 को मनाया गया जिसमें शहीद भगत सिंह राजगुरू, सुखदेव को श्रद्धांजलि दी गई। सर्व प्रथम डा. प्रकाश चन्द जी के ब्रह्मत्व में हवन यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्री कीमती लाल आर्य, हरविन्द्र कुमार आर्य तथा अशोक कुमार अपने-अपने परिवार सहित यज्ञमान बने। श्री लक्ष्मण कुमार तिवारी, श्री कीमती लाल, बंटी, गायत्री, हरविन्द्र कुमार, श्री शशी कोमल प्रधान आर्य बाजार श्रद्धानन्द ने देश भक्ति के भजनों से समय बांध दिया। माता जगदीश रानी, प्रधाना महिला आर्य सभा ने भजनों के माध्यम से शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री इन्द्रपाल जी, आर्य प्रधान आर्य समाज लक्ष्मणसर अमृतसर ने अपने सम्बोधन में कहा कि लोग चाहते है कि भगत सिंह दूसरों के घर में पैदा हो। अपने घर में पैदा न हो। आज कोई देश के लिये नहीं सोचता। बहन स्वराज ग्रोवर ने शहीदों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। पं० बनारसी दास आर्य ने शहीदों की पृष्ठ भूमि पर प्रकाश डाला। सारे परिवार ने कई बार जेल यात्राएं की। स्वामी दयानन्द जी महाराज ने भगत सिंह के दादा सरदार अर्जुन सिंह को यज्ञोपवीत की दीक्षा दी तथा परिवार को देश पर मर मिटने का सबक पढ़ाया। सरदार भगत सिंहने पंडित लोक नाथ जी से यज्ञोपवीत धारण किया और सारा जीवन गायत्री मन्त्र का पाठ करने का प्रण लिया। प्रो० दरबारी लाल पूर्व डिप्टी स्पीकर पंजाब विधानसभा ने क्रांतिकारियों की गतिविधियों पर प्रकाश डाला तथा देश की रक्षा के लिये, देश सेवा के लिये सदैव तत्पर रहने के लिये नौजवानों को आह्वान किया। पश्चात् राज कुमार योगाचार्य ने 20 योग टीचर्स को सम्मानित किया। आर्य समाज की ओर से श्री विजय आनन्द, माता जगदीश रानी तथा प्रो० दरबारी लाल जी को सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम में श्री बाल किशन एडवोकेट, विनोद मदान, निर्मल आर्य, सुदेश आर्य, शकुन्तला आर्य, दयानन्द आर्य स्कूल के बच्चों का तथा योग समितियों का विशेष योगदान रहा। पं० बनारसी दास आर्य ने सब का धन्यवाद किया। शान्ति पाठ के पश्चात् ऋषि लंगर चलता रहा।

-पं. बनारसी दास आर्य

आर्य समाज नवांशहर में आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाया

आर्य समाज नवांशहर द्वारा बी.एड कालेज में आर्य समाज स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर श्री अमित शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में हवन यज्ञ करते हुए यजमान प्रो. कृष्ण गोपाल जी एवं उनकी धर्मपत्नी। उनके साथ बैठे हैं आर्य समाज के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विनोद भारद्वाज जी, श्री कुलवन्त राय शर्मा जी, श्री जिया लाल जी, आर्य समाज के वरिष्ठ सदस्य श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी एवं अन्य। जबकि चित्र दो में ज्योति प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुये आर्य समाज के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विनोद भारद्वाज जी एवं अन्य।

आर्य समाज नवांशहर के तत्वावधान में आर्य समाज स्थापना दिवस बी.एड. कालेज के सभागार में आर्य समाज नवांशहर की सहयोगी शिक्षण संस्थाओं की सहभागिता के साथ बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। सर्वप्रथम इस कार्यक्रम में पंडित अमित शास्त्री के ब्रह्मत्व में नव सम्वतसर व आर्य समाज की उन्नति हेतु यज्ञ में सभी लोगों ने यज्ञ के यजमान प्रो. कृष्ण गोपाल व उनकी धर्मपत्नी के साथ श्रद्धा सहित आहुतियां समर्पित की और नव सम्वत सबके लिये खुशहाल हो तथा आर्य समाज महर्षि दयानन्द के सपनों को पूरा करने की ओर प्रयासरत हो ऐसी ईश्वर से प्रार्थना की। तत्पश्चात कालेज की छात्राओं से ईश्वर भक्ति के भजन सुना कर सुरलहरियों से वातावरण को स्वरमय बनाया। फिर आर्य समाज के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विनोद भारद्वाज जी ने कहा कि आज भी आर्य समाज की उतनी ही आवश्यकता है जितनी उन्नीसवीं सदी में थी और उस समय जो कार्य महर्षि दयानन्द ने कर दिखाया था आज हमें उन्हीं के पदचिन्हों पर चलने की महती आवश्यकता है। महर्षि ने हर क्षेत्र में जो आयाम स्थापित किये उन्हें आज हमें सहेजना होगा। यही हम सब का कर्त्तव्य बनता है। हम तभी महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास कर सकते हैं। इस अवसर पर आर.के.आर्य कालेज के इतिहास विभाग के अध्यक्ष डा. विनय सोफत जी ने अपने वक्तव्य में सब को उद्बोधित व आन्दोलित करते हुये कहा कि हम जहां जहां दृष्टिपात करते हैं समाज का कोई भी क्षेत्र हो चाहे शिक्षा, नारी उत्थान, विधवा विवाह, सती प्रथा, प्रजातंत्र, पर्यावरण शुद्धि, एकता, आजादी का आन्दोलन, चाहे कोई भी हो आज की ज्वलंत समस्या हो जब उन पर विचार करते हैं तो हमें उस वक्त कर्मयोगी महर्षि दयानन्द का उस कार्यक्षेत्र में जिन्होंने 19वीं सदी में ही वेदों का संदेश देकर पूर्व ही समाधान दिखा दिया था परन्तु खेद है कि हम उस महर्षि की बातों की वैज्ञानिकता के साथ अपने जीवन में नहीं ढाल पाये। आज हम सब का यही कर्त्तव्य है कि हम महर्षि की विचारधारा को अपने अंदर, अपने परिवार के अंदर व अपने समाज के अंदर प्रचारित व प्रसारित करने का संकल्प लें तभी हमारा यह दिवस मनाना सफल होगा।

इस अवसर पर बी.एड. कालेज की छात्राओं ने समाज के विभिन्न कार्य क्षेत्रों में जिन महान महिलाओं ने अग्रिम पंक्तियों में स्थान प्राप्त किया उनके जीवन से सम्बन्धित जीवन चरित्र व कार्यशैली व संघर्षों को दर्शाती हुई एक भव्य प्रदर्शनी का आयोजन तीन सदनों में बैठ कर दर्शाया। निर्णायक की भूमिका बी.एल.एम गर्ल्ज कालेज की प्रोफैसर डा. अरुषा, डा. गौरी, डा. अरूणा पाठक ने निभाई। प्रथम स्थान स्वामी श्रद्धानंद सदन, द्वितीय स्थान विरजानन्द सदन, तृतीय स्थान महर्षि दयानन्द सदन ने प्राप्त किया। इस अवसर पर बी.एड कालेज के प्रधान एवं सचिव श्रीमती मीनाक्षी (शेष पृष्ठ चार पर)

नव सम्वत पर जिला आर्य सभा लुधियाना ने मनाया आर्य समाज स्थापना दिवस

जिला आर्य सभा लुधियाना ने नवसम्वत एवं आर्य समाज स्थापना दिवस 7 अप्रैल 2019 को आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल (मालेरकोटला हाउस शाखा)लुधियाना में धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर जिला आर्य सभा के पदाधिकारी हवन यज्ञ करते हुये जबकि चित्र दो में इस अवसर पर आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट एवं सभा कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी के पधारने पर फूलमालाएं पहना कर उनका स्वागत करते हुये जिला आर्य सभा लुधियाना की प्रधाना श्रीमती राजेश शर्मा जी एवं अन्य पदाधिकारी जबकि चित्र तीन में उपस्थित जनसमूह।

जिला आर्य सभा लुधियाना ने नव सम्वत् के शुभारम्भ पर 7 अप्रैल 2019 को आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल (मालेर कोटला हाउस शाखा) में आर्य समाज का 145वां स्थापना दिवस मंगल यज्ञ से आरम्भ किया जिसमें यजमानों ने बड़ी श्रद्धा से आहुतियां प्रदान कर शान्ति व मानव कल्याण के लिये कामनाएं की। प्रसिद्ध उद्योगपति एवं उप प्रधान जिला आर्य सभा श्री मुनीष मदान व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शालू मदान जी ने ज्योति प्रज्जवलित की। आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट एवं सभा कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती परवेश शर्मा तथा श्रीमती रमेश महाजन, श्री रवि महाजन जी विशिष्ठ अतिथि के रूप में उपस्थित हुये। इन सभी मान्य अतिथियों का फूलमालाएं पहना कर जिला आर्य सभा के पदाधिकारियों द्वारा भव्य स्वागत किया गया।

पंडित राजेन्द्रव्रत जी ने अपने मधुरस्वर में प्रभु भक्ति के भजन सुना कर समय बांध दिया व सभी आनन्दित हो उठे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक आचार्य नारायण सिंह जी ने अपने प्रवचन में कहा कि विक्रमी सम्वत् सभी भारतीयों का है अत: इसे किसी एक जाति विशेष से नहीं जोड़ना चाहिये। महर्षि दयानन्द जी ने इसी दिन सम्वत् 1932 में संसार से पाखंड, अंधविश्वास को मिटा कर सच्चे वेद ज्ञान को जन जन तक पहुंचाने के लिये आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार एडवोकेट अशोक परूथी जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि आर्य समाज ने अपने पिछले 144 वर्षों में जाति प्रथा उन्मूलन, दलित उद्धार व नारी शिक्षा क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य किया है। आज आवश्यकता है कि शिक्षा संस्थानों में बच्चों को नैतिक शिक्षा दे मानव धर्म सिखाया जाए जिससे हमारे राष्ट्र के अंदर सभी लोग शांति व सद्भाव से रह सकें। मंच का संचालन करते हुये डा. विजय सरीन जी ने कहा कि हमें दूसरों की गलतियां निकालने के स्थान (शेष पृष्ठ चार पर)

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।